



12. योग परम्परा में आचार्य रजनीश 'ओशो' का स्थान

प्रीति रानी

शोधार्थी

योग विभाग, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड

डॉ. भारत भूषण सिंह

सहायक प्रोफेसर

योग विभाग, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड

शोध सार

ऐतिहासिक सन्दर्भों में भारतीय योग परम्परा का इतिहास विश्व का सबसे प्राचीन इतिहास रहा है। भारत में समय-समय पर अनेको छोटे-बड़े आध्यात्मिक सम्प्रदाय, महापुरुष, संस्थान, पुष्पित व पल्लवित होते रहे हैं। ये सभी योग शिक्षा का प्रचार प्रसार करते रहे हैं। इन्हीं महापुरुषों की श्रेणी में आचार्य रजनीश (ओशो) का नाम भी सम्मिलित है। ओशो ने ध्यान व योग का प्रचार-प्रसार विश्व में जन जन तक पहुंचाकर जन मानस को जागरूक करने का प्रयास किया। उन्होंने योग की सांस्कृतिक धरोहर को विकसित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके यौगिक विचार और आध्यात्मिक प्रवचनों से विश्व में भारत का नाम उच्चारित किया जाता है। ओशो ने पारम्परिक योग को एक नई दिशा देकर आधुनिक मनोविज्ञान, अस्तित्ववाद और स्वतन्त्र चिंतन के साथ जोड़ा। ओशो ने अपने प्रवचनों में योग के विभिन्न रूपों का समावेश किया। ओशो ने भारतीय योग व आध्यात्म को अन्तरराष्ट्रीय मंच पर पहुँचाने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आचार्य रजनीश का मानना था कि योग एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति है। योग से न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि समाजिक स्तर पर भी उन्नति व प्रगति प्राप्त की जा सकती है। ओशो ने मानवता, धर्म, और समाज के विभिन्न पहलुओं पर अपने दृष्टिकोण से चर्चा की थी। उनके विचारों का अध्ययन करके, योग परम्परा में आचार्य रजनीश (ओशो) के स्थान का मूल्यांकन भी कर सकते हैं। भारत की चेतना को ऊपर उठाने में तथा भारत को विकास की ओर अग्रसर करने में आचार्य रजनीश का योगदान हमेशा अतुलनीय रहेगा। अतः प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से योग परम्परा में ओशो का स्थान, उनका दार्शनिक योगदान, परम्परागत योग से उनके सम्बन्ध एवं समकालीन प्रभान का विश्लेषण निम्नरूपेण प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

कूट शब्द - योग, ओशो, योग परंपरा, आचार्य रजनीश, योग का विकास।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में योग का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। ऋग्वेद, उपनिषद, महाभारत और भगवद्गीता में योग के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन मिलता है। योग का शास्त्रीय रूप महर्षि पतंजलि द्वारा रचित योगसूत्र में मिलता है, जिसमें अष्टांग योग की प्रणाली प्रस्तुत की गई है। समय के साथ-साथ योग के विभिन्न मार्ग विकसित हुए—राजयोग,



हठयोग, भक्तियोग, कर्मयोग और ज्ञानयोग। मध्यकाल में नाथयोगियों, संतों तथा सूफी संतों ने योग को व्यापक आध्यात्मिक आंदोलन का रूप दिया। आधुनिक काल में स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंद, महर्षि महेश योगी और ओशो जैसे विचारकों ने योग को आधुनिक संदर्भों में पुनः व्याख्यायित किया। ओशो का योगदान विशेष इसलिए है क्योंकि उन्होंने योग को केवल तप, त्याग या अनुशासन की कठोर प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे जीवन के उत्सव, प्रेम और चेतना की जागरूकता से जोड़ा। उनका मानना था कि आधुनिक मनुष्य की मानसिक संरचना बदल चुकी है, इसलिए ध्यान और योग की पद्धतियों को भी समयानुकूल बनाना आवश्यक है। ओशो ने अपने प्रवचनों में कई बार इन प्रसंगों की चर्चा की है कि- भारत को अध्यात्म व विज्ञान दोनों तलों पर ऊँचाई प्राप्त करनी चाहिए। हम समृद्ध बन सकते हैं। ओशो के हर आयाम में एक धारा की तरह बहता हुआ वह जीवन-दर्शन है जो पूरब की समयातीत प्रज्ञा और पश्चिम के विज्ञान और तकनीकी की सर्वोच्च संभावनाओं को एक साथ समाहित करता है।¹ जीवन का एक ऐसा कोई भी आयाम नहीं है जो उनके प्रवचनों से अस्पर्शित रहा हो, योग, दर्शन, शिक्षा, परिवार, समाज, गरीबी, जनसंख्या-विस्फोट, जैसे विभिन्न विषयों पर उन्होंने सविस्तार प्रकाश डाला।²

योग परंपरा का ऐतिहासिक विकास

इसमें कोई संदेह नहीं है कि योग विद्या अत्यन्त प्राचीन है। योग को भारतीय संस्कृति में जो अप्रतिम महत्व प्राप्त है वह उसके मूल आधार में निहित अप्रतिम साधना प्रणाली के कारण है। अनेकों महापुरुषों की सुवर्णकृत गाथाएँ प्राचीन ग्रन्थों में हैं जिन्होंने योग विद्या के आश्रय से ही चिरस्मरणीय कार्य सम्पादित किए हैं। पुरातात्विक प्रमाण की दृष्टि से देखें तो 1921-22 में हड़प्पा-मोहनजोदड़ो में हुए उत्खनन से प्राप्त अवशेष प्रमाणित करते हैं कि योग की उत्पत्ति लगभग पांच हजार ई. पू. से पहले की है।

वेदों में योग के अनेकों प्रमाण उपलब्ध हैं। वेदों में ही योग का आदि प्रवक्ता हिरण्यगर्भ को कहा है। हिरण्यगर्भ ने ही सूर्यादि तेजस्वी पदार्थों को ग्रहण किया हुआ था।³ हिरण्यगर्भ ही प्रथम और सबसे पुरातन है। महाभारत में भी योग का आदि प्रवक्ता हिरण्यगर्भ को ही कहा गया है।⁴ अद्भुतरामायण में भी हिरण्यगर्भ को जगत का अन्तरात्मा कहा गया है।⁵ समाधि की अवस्था में अग्नि, वायु, आदित्य, अङ्गिरा इन ऋषियों को भगवान हिरण्यगर्भ के द्वारा वेदमन्त्रों का साक्षात्कार हुआ। उपनिषदों में भी योग की परम्परा का वर्णन प्राप्त होता है। जैसे-मुण्डकोपनिषद के अनुसार ब्रह्मा ने यह ब्रह्मविद्या अपने पुत्र अथर्वा से, अथर्वा ने अंगिरा से, अंगिरा ने सत्यवाह से कही। फिर इस योग विद्या को अंगिरस ऋषि से महाशाल शौनक ने ग्रहण किया।⁶

त्रेता युग में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम शास्त्रों तथा योग विद्या के ज्ञाता थे।⁷ महाराजा जनक ऐसे राजर्षि थे जिनका नामोल्लेख श्री कृष्ण ने गीता में किया है।⁸ हनुमान जी और अंगद भी योगबली थे। द्वापरयुग काल में श्री कृष्ण उस योग परम्परा के प्रवर्तक थे जो आदि काल से चली आ रही थी। श्री कृष्ण कहते हैं, कि- योग को मैंने विवस्वान् (सूर्य) से कहा। विवस्वान् ने वैवस्वत् मनु से, मनु ने राजा इक्ष्वाकु से कही। हे अर्जुन आज मैंने (श्रीकृष्ण) उसी पुरातन योग को तुझसे कहा है।⁹



श्रीमद्भागवत् व अन्य पुराणों में योग की उद्भावना ब्रह्मदेव द्वारा निःसृत मानी गयी है। तथा भागवत पुराण के अनुसार कपिल मुनि ही योगशास्त्र के प्रथम उपदेष्टा है-सिद्धानां कपिलो मुनिः।¹⁰ भागवत की योग परम्परा में अनेक योगियों हुए जैसे -व्यास जी, शुकदेव जी, राजा परीक्षिता भागवत के अनुसार अर्जुन ने भगवान दत्तात्रेय से, कृति मुनि ने हिरण्यनाभ (जैमिनी मुनि के शिष्य) से तथा विष्वक्सेन (ब्रह्मदत्त के पुत्र) ने जैगीषव्य से योग विद्या प्राप्त की। भागवत परम्परा में योग प्रचार हेतु विचरण करने वाले योगर्षियों का भी वर्णन है जैसे - सनत्कुमार, वसिष्ठ, दत्तात्रेय, पतंजलि, याज्ञवल्क्य, शुकदेव, महायोगी बाल्मिकी के पुत्र वरुण आदि।¹¹

हठयोग परम्परा में आदिनाथ (शिव) को योग का प्रवर्तक मानते हैं। घेरण्ड ऋषि आदि ईश्वर¹² को तथा हठयोग योग प्रदीपिका में स्वात्माराम स्वामी आदिनाथ (शिव) को हठयोग विद्या का उपदेशक मानते हैं।¹³ हठयोग प्रदीपिका में हठयोग की परम्परा से जुड़े कई सिद्ध योगियों के नाम कहे गए हैं जैसे -आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, गोरक्षनाथ, भैरव आदि। गोपीचंद तथा भर्तृहरि भी इस विद्या के जानकार थे।

आधुनिक काल में योग की परम्परा को बनाए रखने में कुछ महान उपदेशकों का प्रयास सम्मिलित है जैसे - स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस, महात्मा गाँधी, श्री अरविन्द, परमहंस योगानंद, स्वामी कुवल्यानंद जी, जे. कृष्णमूर्ति, महर्षि महेश योगी, आचार्य रजनीश (ओशो), आदि। इन विचारकों ने कर्मयोग, अनासक्तयोग, सर्वोदय दर्शन, ध्यान योग आदि के माध्यम से योग को नये आयाम देकर समाज में विस्तारित किया।¹⁴ अतः देखा जाए तो भारतीय प्राणों में योग महत्व सार्वकालिक व सार्वभौमिक रहा है।

योग परंपरा में ओशो का योगदान -

योग परंपरा में ओशो का योगदान विशेष इसलिए है क्योंकि उन्होंने योग को केवल तप, त्याग या अनुशासन की कठोर प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे जीवन के उत्सव, प्रेम और चेतना की जागरूकता से जोड़ा। उनका मानना था कि आधुनिक मनुष्य की मानसिक संरचना बदल चुकी है, इसलिए ध्यान और योग की पद्धतियों को भी समयानुकूल बनाना आवश्यक है। योग परंपरा में ओशो का योगदान कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है यथा—

जीवन और योग का समन्वय

ओशो ने ध्यान को आधुनिक मनोविज्ञान और जीवनशैली के अनुरूप बनाकर डायनामिक मेडिटेशन जैसी कई सक्रिय ध्यान पद्धतियाँ पद्धतियों के माध्यम से योग और ध्यान को नई दिशा दी। और उन्होंने योग को जीवन के उत्सव और आनंद से जोड़ा। ओशो के विचारों ने पश्चिमी देशों में ध्यान और योग के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जीवन और योग का समन्वय स्थापित करने तथा मनुष्य में शरीर की जागरूकता, मन की शुद्धि और चेतना के विस्तार के लिए ओशो ने जागरूकता (Awareness), प्रेम (Love), ध्यान (Meditation), उत्सव (Celebration) का मूल संदेश दिया।

ओशो की योग संबंधी अवधारणा को देखा जाए तो उनका मानना था कि मनुष्य को अपनी चेतना को जाग्रत करना चाहिए, क्योंकि वही वास्तविक योग है। ओशो ने योग को केवल शारीरिक व्यायाम या आसनों तक सीमित नहीं माना। उनके अनुसार योग का अर्थ है “स्वयं को जानने की प्रक्रिया।” ओशो का कहना था कि योग का उद्देश्य शरीर,



मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करना है। ओशो का दृष्टिकोण पारंपरिक योग से कुछ अलग था। वे मानते थे कि आधुनिक मनुष्य के भीतर बहुत दमन और तनाव है, इसलिए पहले उसे मुक्त करना आवश्यक है।

ध्यान शिविरों का आयोजन

भारतीय योग परम्परा और आध्यात्मिकता में आचार्य रजनीश का एक महत्वपूर्ण स्थान है। ओशो ने विशाल संख्या में सत्संगों और ध्यान समारोहों का आयोजन किया है जहां वे योग की अनुभूति, ध्यान और जीवन की अनुभूति को जगाने के लिए साधकों को प्रेरित करते थे। ओशो आंतरिक रूपांतरण के विज्ञान में अपने क्रांतिकारी योगदान के लिए जाने जाते हैं और ध्यान की उन विधियों के प्रस्तोता हैं जो आज के गतिशील जीवन को ध्यान में रख कर रची गई हैं।¹⁵ इस देश ने जगत को अगर कुछ दिया है, इसका अगर कोई अनुदान है तो वह सिर्फ ध्यान है। अलग-अलग लोगों से, अलग-अलग आवाजों में एक ही पुकार, एक ही आवाज हम जगत को देते रहे हैं, और वह आवाज है ध्यान की।¹⁶ इसी आवाज को ओर अधिक तीव्र गति से बढ़ाने के लिए ओशो ने पूरे विश्व में ध्यान का एक विराट आंदोलन चलाया। ओशो ने अपने प्रवचनों में कई बार छोटी-बड़ी ध्यान विधियां बताते रहते थे। उन सब छोटी-बड़ी विधियों को जोड़ दिया जाए तो वह हजार से भी ऊपर होंगी। परंतु ओशो के अनुसार उन्होंने एक सौ आठ ध्यान की विधियां दी हैं।¹⁷

ओशो की देशना में ध्यान की महत्वपूर्ण भूमिका है। उनका कहना था कि ध्यान के माध्यम से हम अपने आप से मिल सकते हैं और सुख, मानसिक स्थिरता और आत्म-सामर्थ्य को प्राप्त कर सकते हैं। ध्यान व्यक्ति को आध्यात्मिक और मानवीय दृष्टिकोण से उच्च बनाता है। ओशो को लंदन के दैनिक टाइम्स ने “बीसवीं सदी के 1000 निर्माताओं” में से एक कह कर वर्णित किया है। सुप्रसिद्ध अमरीकी लेखक टॉम राबिन्स ने लिखा है कि ओशो “जीसस क्राइस्ट के बाद सर्वाधिक खतरनाक व्यक्ति हैं।” भारत के संडे मिड-डे ने ओशो को गांधी, नेहरू और बुद्ध के साथ उन दस लोगों में चुना है जिन्होंने भारत का भाग्य बदल दिया।¹⁸

मानव चेतना का पुनर्स्थापन

ओशो के हजारों प्रवचन अर्थवत्ता की व्यक्तिगत तलाश से लेकर आज समाज के समक्ष उपस्थित सर्वाधिक ज्वलंत सामाजिक व राजनैतिक समस्याओं तक सब-कुछ पर प्रकाश डालते हैं।¹⁹ अपने प्रवचनों के द्वारा ओशो ने मानव-चेतना के विकास के हर पहलू को उजागर किया। बुद्ध, महावीर, कृष्ण, शिव, शांडिल्य, नारद, जीसस के साथ ही साथ भारतीय अध्यात्म-आकाश के अनेक नक्षत्रों आदिशंकराचार्य, गोरख, कबीर, नानक, मल्लूकदास, रैदास, दरियादास, मीरा, पतंजलि आदि पर उनके हजारों प्रवचन उपलब्ध हैं।²⁰

आडम्बरो व क्रियाकांडो का खण्डन -

ओशो लोगों को बंधनों एवं अंधविश्वासों से मुक्त करना चाहते थे, वह चाहते थे कि मनुष्य जागे और अपना मार्ग स्वयं बनाए। ओशो कहते हैं, धर्मगुरु मनुष्य के अंतर जगत का शोषण करते हैं और राजनेता उसके बाहरी जीवन का शोषण करते हैं। इन दो पाटों के बीच पूरी मनुष्यता सदियों से पिसी जा रही है। ‘जब मनुष्य क्रियाकांड के मुखतापूर्ण व अर्थहीन बातों से मुक्त होगा, तब वह भीतर की चेतना की तरफ मुड़ेगा। ऐसा चैतन्यपूर्ण आदमी जब वैज्ञानिक



खोज में लगेगा तब धर्म और विज्ञान में विरोध नहीं सामंजस्य होगा। सच तो यह है कि धर्म, विज्ञान के एक कदम आगे होगा। इस सामंजस्य के कारण मनुष्य भीतर से शांत एवं समाधानी होगा और बाह्य जीवन में समृद्ध तथा स्वस्थ होगा।²¹ देश में जब अंधश्रद्धा, अंधविश्वास और धर्म के नाम पर चलने वाले पाखंडों का बोलबाला था, उस समय ओशो एक प्रकार की आंधी लेकर आए। भारत को पुनर्विचार करना सिखाया। ओशो ने एक बड़े पैमाने पर लोगों को, भारत के मानस को झकझोरा, जगाया, उद्वेलित एवं आंदोलित किया।²²

योग रूपी विशाल साहित्य का निर्माण:-

ओशो ने अपने विचारों और अनुभवों के माध्यम से योग को जीवन खोज के लिए उपयोगी बताया है। उन्होंने योगासन, प्राणायाम, मुद्रा, ध्यान और साधनाओं की प्रायोगिक विधियों का समर्थन किया। शिष्यों और साधकों के बीच दिए गए उनके ये प्रवचन छह सौ पचास से भी अधिक पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं और तीस से अधिक भाषाओं में अनुवादित हो चुके हैं। वे कहते हैं, “मेरा संदेश कोई सिद्धांत, कोई चिंतन नहीं है। मेरा संदेश तो रूपांतरण की एक कीमिया, एक विज्ञान है।”²³

शास्त्रों की मौलिक, वैज्ञानिक व युगानुकूल व्याख्या:-

ओशो का मानना है कि समय की लम्बी यात्रा में धर्म ग्रन्थों की व्याख्या व उनके अर्थों पर धूल एकत्रित हो जाती है। इसी कारण बहुत बार प्राचीन विज्ञान व विद्ययाे वर्तमान में उपयोगी नहीं रह जाते। इसी संदर्भ में आचार्य रजनीश ने योग शास्त्र में वर्णित योग तत्वों की नवीन व वैज्ञानिक व्याख्या से उसे आधुनिक समय के लिये प्रासंगिक व उपयोगी बनाने का प्रयास किया। जिससे कि व्यक्ति व समाज का आध्यात्मिक पुनः निर्माण करने में सहयोग मिल सके। ओशो जिन विषयों पर बोलते थे वे विषय बहुत अलग थे, ओशो कोई पारंपरिक संतों की तरह धार्मिक कर्मकांड आदि पर नहीं बोल रहे थे। वे अंधविश्वासों से परे उन विषयों पर बोल रहे थे जिन पर इससे पहले, इस ढंग से किसी ने नहीं बोला था। वह मनुष्य के आत्मिक विकास के लिए, आत्मरूपांतरण के लिए बोल रहे थे। ओशो के विषय उन तथाकथित संतों से बिल्कुल अलग थे।²⁴ कौन क्या कहेगा, क्या सोचेगा बिना इसकी परवाह के अपनी बात रखते थे। ओशो समाज की नींद तोड़ना चाहते थे। जैसा कि वे कहते हैं: “तो याद रहे, मैं जो भी कह रहा हूँ वह केवल तुम्हारे लिए ही नहीं... मैं भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी बोल रहा हूँ।”²⁵

पतंजलि योग पर ओशो की व्याख्या

ओशो ने पतंजलि योगसूत्र पर विस्तृत प्रवचन दिए, जिन्हें बाद में Yoga: The Alpha and the Omega के नाम से प्रकाशित किया गया। उन्होंने पतंजलि को योग का महान वैज्ञानिक बताया। उनके अनुसार पतंजलि का योग अत्यंत व्यवस्थित और मनोवैज्ञानिक है। ओशो की दृष्टि में किसी अन्य की पतंजलि के साथ तुलना नहीं की जा सकती। मनुष्यता के इतिहास में धर्म को पहली बार विज्ञान की अवस्था तक लाया गया।²⁶ ओशो ने अष्टांग योग को आधुनिक मनोविज्ञान के संदर्भ में समझाया और कहा कि ध्यान ही योग का केंद्रीय तत्व है। उन्होंने पतंजलि को “योग का वैज्ञानिक” कहा। उनका मानना था कि पतंजलि का योग अत्यंत वैज्ञानिक और व्यवस्थित है। ओशो ने पतंजलि के अष्टांग योग को आधुनिक भाषा में समझाया और उसके मनोवैज्ञानिक पक्ष को उजागर किया।

विषय/ आयाम	पतंजलि	ओशो
योग की परिभाषा/लक्ष्य	चित्तवृत्ति निरोध	अ- मन की अवस्था , जागरूकता तथा साक्षीभाव
साधना-पद्धति	अष्टांग योग, अनुशासन	सक्रिय ध्यान पद्धतियाँ
दृष्टिकोण	संयम, तप एवं अनुशासन आधारित	उत्सव, स्वीकृति, अनुभव आधारित

आचार्य रजनीश की दृष्टि में- योग और स्वर्णिम भारत-

ओशो कहते हैं कि- सपना तो एक है, मेरा अपना नहीं, सदियों पुराना है, कहें कि सनातन है। वह सपना मनुष्य का, मनुष्य की अंतरात्मा का सपना है। इस सपने को हमने एक नाम दे रखा है। हम इस सपने को भारत कहते हैं। भारत कोई भूखंड नहीं है। भारत है एक अभीप्सा, एक प्यास – सत्य को पा लेने की। वह जो हमारा होकर भी हमें भूल गया है। उसका पुनः स्मरण उसकी पुनरुद्घोषणा भारत है। 'अमृतस्य पुत्रः- ऐ अमृत के पुत्रो', जिनने इस उदघोषणा को सुना, वे ही केवल भारत के नागरिक हैं।²⁷ भारत एक सनातन यात्रा है, एक अमृत पथ है, जो अनंत से अनंत तक फैला हुआ है। मैं भी उस अनंत यात्रा का छोटा-मोटा यात्री हूँ। चाहता था कि जो भूल गये हैं, उन्हें याद दिला दूँ; जो सो गए हैं, उन्हें जगा दूँ। और भारत अपनी आंतरिक गरिमा और गौरव को, अपनी हिमाच्छादित ऊंचाइयों को पुनः पा ले। और अगर हम भारत को पुनः उसके के पंख दे देते हैं, पुनः उसका आकाश दे देते हैं, पुनः उसकी आंखों को सितारों की तरफ उड़ने की चाह से भर देते हैं तो हम केवल उनको ही नहीं बचा लेते हैं, जिनके भीतर प्यास है। हम उनको भी बचा लेंगे हैं, जो आज सोये हैं, लेकिन कल जागेंगे; जो आज सोये हैं, लेकिन कल घर लौटेंगे।²⁸

इस प्रकार ओशो के यौगिक विचारों ने योग परंपरा के निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आचार्य रजनीश ने योग की अद्वितीयता को समझाया। उन्होंने इसके द्वारा मानव जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास किया। ओशो अपने जीवनकाल में विभिन्न ध्यान तकनीकों, का निर्माण किया। उन्होंने योग को एक महत्वपूर्ण विज्ञान के रूप में देखा और मनोबल, तंत्र और प्राणिक अभियांत्रिकी पर प्रयोग किए। ओशो ने योग को एक साधारण शारीरिक या मानसिक अभ्यास से अधिक एक उन्नत और संपूर्णवादी जीवन शैली की ओर प्रेरित किया।

भूतकाल और भविष्य के प्रति ध्यान:-

ओशो कहते हैं कि-हम अतीत के ग्रंथ पढ़ेंगे, अतीत के महापुरुषों का स्मरण करेंगे। अतीत की सारी बातें हमारे मन में बहुत स्वर्ण की होकर बैठ गई हैं। बुरा नहीं है कि हम अतीत के महापुरुषों को याद करें। लेकिन खतरनाक हो जाता है अगर भविष्य की तरफ देखने में हमारी स्मृति बाधा बन जाए। अतीत का इतना ही उपयोग है जितना रियरव्यू मिरर का एक कार में उपयोग होता है। पीछे का भी हमें दिखाई पड़ता रहे। यह जरूरी है। लेकिन चलना भविष्य में है, बढ़ना



आगे है। और अगर भविष्य की तरफ देखने वाली आंखें बंद हो जाएं, तो दुर्घटना के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं हो सकता।

लेकिन ध्यान रहे, जो भविष्य में अच्छे आदमियों को पैदा हम न कर पाए तो हमारे अतीत के अच्छे आदमी झूठे मालूम पड़ने लगेंगे। अगर हम भविष्य में और श्रेष्ठताएं न छू सके तो हमारे अतीत की सारी श्रेष्ठताएं काल्पनिक और कहानियां मालूम पड़ने लगेंगी। भविष्य तय करेगा कि हमने अतीत में राम को पैदा किया या नहीं पैदा किया। अगर हम भविष्य में राम से बेहतर आदमी पैदा कर सकते हैं तो ही हमारे राम सच्चे साबित होंगे। अगर हम राम से बेहतर आदमी पैदा नहीं कर सकते तो दुनिया हमसे कहेगी कि राम सिर्फ कहानी हैं। ओशो कहते हैं-अतीत को देखना उपयोगी हो सकता है, लेकिन अतीत को आंख में रखना खतरनाक है। आंख में तो भविष्य होना चाहिए, आने वाला कल होना चाहिए। मैं भारत को जवान देखना चाहता हूँ। लेकिन भारत के मन को बदलना पड़ेगा, तो ही भारत जवान हो सकता है। मैं भारत को बूढ़ा नहीं देखना चाहता हूँ।²⁹

संत परम्परा मे-ओशो:-

संत तो बहुत हुए हैं, परंतु ओशो जैसा संबुद्ध रहस्यदर्शी शायद ही कोई हुआ हो। अब तक ओशो ने जितने विषयों पर बोला है, शायद ही इतना किसी और संत ने बोला होगा। ओशो ने वेद, पुराण, उपनिषद, श्रुति, गीता, कुरान, बाइबल, ताओ, ऋतु, धम्म, जैन, झेन, तन्त्र, मंत्र, योग के साथ-साथ शिव, नारद, गोरख, कृष्ण, अष्टावक्र, शंकर महावीर, जीसस, बुद्ध, नानक, कबीर, फरीद, कृष्णमूर्ति, नागार्जुन, राबिया, लला, मीरा, दयाबाई, सहजोबाई, रैदास, पल्टू, शांडिल्य, दरिया, रज्जब, वाजिद, स्वामी राम, रामकृष्ण परमहंस, धर्मदास, मलुकदास, दुलनदास, जगजीवन लाल, गुलाल, बुल्लेशा, भीखा, यारी, जरथुस्त, लाओत्से इत्यादि सब आदरणीय संतों की वाणी पर अपने विचार व्यक्त कर नये शब्दों के साथ संतों को जन-जन तक पहुंचाया।³⁰ परंतु फिर भी ओशो की तुलना किसी गुरु, किसी विचारक, दार्शनिक, चिंतक या साहित्यकार से नहीं की जा सकती। ओशो अतुलनीय और बेजोड़ हैं। वे आने वाले सैकड़ों-हजारों वर्षों के लिए एक नए मनुष्य और एक नयी मनुष्यता की आधारशिला तैयार करके गए हैं।³¹

एक नये युग व मनुष्य का जन्म:-

बुद्धपुरुषों की अमृत धारा में ओशो एक नया प्रारंभ है। वे अतीत की किसी भी धार्मिक परंपरा या श्रृंखला की कड़ी नहीं है। ओशो से एक नये युग का शुभारंभ होता है और उनके साथ ही समय दो सुस्पष्ट खंडों में विभाजित होता है : ओशो-पूर्व तथा ओशो-पश्चात्। ओशो के आगमन से एक नये मनुष्य का, एक नये जगत का, एक नये युग का सूत्रपात हुआ है, जिसकी आधारशिला अतीत के किसी धर्म में नहीं है, किसी दार्शनिक विचार-पद्धति में नहीं है। ओशो एक नवोन्मेष है नये मनुष्य के, नयी मनुष्यता के। ओशो का यह नया मनुष्य 'जोरबा दि बुद्धा' एक ऐसा मनुष्य है जो जोरबा की भांति भौतिक जीवन का पूरा आनंद मनाना जानता है और जो गौतम बुद्ध की भांति मौन होकर ध्यान में उतरने में ही सक्षम है। ऐसा मनुष्य है जो भौतिक और आध्यात्मिक, दोनों तरह से समृद्ध है। ओशो का यह नया मनुष्य ही भविष्य की एकमात्र आशा है, इसके बिना पृथ्वी का कोई भविष्य शेष नहीं है।³²

संन्यास और आश्रम की नई परिभाषा



ओशो ने संन्यास व संन्यासी की एक नई व भिन्न पहचान गढ़ी, जो व्यावहारिक होने के साथ- साथ पूर्ण रूप से वैज्ञानिक भी थी। ओशो का संन्यास नीरसता, कर्मकांड, त्याग और भोग और परे उत्सव, आनंद ओर आधार बोध पर आधारित था, जिसे उन्होंने नव संन्यास का नाम दिया। ओशो कहते हैं कि- मैं तुम्हें जो संन्यास दे रहा हूँ, वह भविष्य का संन्यास है। तुम्हें धन-संपत्ति के मध्य ऐसे रहना है जैसे कमल जल में रहता है। तुम संसार में रहो, लेकिन संसार तुम्हारे भीतर न रहे।

इस जगत को ओशो का जो सबसे बड़ा योगदान है वो है उनके द्वारा बनाए गए आश्रम व आश्रम व्यवस्था। ओशो के आश्रम पारंपरिक आश्रमों से भिन्न हैं। ओशो कम्यून अपने आप में विश्व की प्रथम विशुद्ध साम्यवादी व्यवस्था का पूंजीवादी धरती पर उतरना था। ओशो ने अपने आश्रमों में संन्यासियों को ऐसी व्यवस्था दी जिससे संन्यासी उत्सव पूर्ण ढंग से हंसते, नाचते, गाते और ध्यान करते हुए पूरी मनुष्यता के प्रति अपना दायित्व महसूस करें। कम्यून के बारे में ओशो कहते हैं मैं यहां एक अनूठा प्रयोग कर रहा हूँ, जैसा कभी नहीं किया गया है। तुम मेरे आश्रम में हो तो ख्याल रखो, मैं दमन का पक्षपाती नहीं हूँ। मैं अनुभव का पक्षपाती हूँ।³³

आधुनिक मनुष्य के लिए ओशो का योग

ओशो का मानना था कि आधुनिक समाज में मनुष्य अत्यधिक तनाव, प्रतिस्पर्धा और मानसिक दबाव से ग्रस्त है। इसलिए योग को केवल पारंपरिक अनुशासन के रूप में प्रस्तुत करना पर्याप्त नहीं है। उन्होंने कहा कि योग को जीवन के साथ जोड़ना आवश्यक है। ओशो के अनुसार योग का उद्देश्य जीवन से भागना नहीं बल्कि जीवन को पूर्णता से जीना है। उन्होंने “ज़ोरबा द बुद्ध” की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसका अर्थ है—भौतिक जीवन और आध्यात्मिक चेतना का संतुलना³⁴ उनका योग जीवन से भागने का नहीं बल्कि जीवन को पूर्णता से जीने का मार्ग है। उन्होंने कहा कि पहले व्यक्ति को अपने भीतर के तनाव को मुक्त करना होगा। इसलिए उन्होंने सक्रिय ध्यान पद्धतियाँ विकसित कीं।

आधुनिक योग पर ओशो के प्रभाव की गणना की जाए तो ओशो ने ध्यान को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रस्तुत किया। योग को धर्मनिरपेक्ष स्वरूप देकर पश्चिमी देशों में भी ध्यान का प्रसार किया। पारंपरिक योग में तप और संयम पर बल है, जबकि ओशो ने जीवन को उत्सव के रूप में स्वीकार करने पर जोर दिया।

निष्कर्ष –

योग परंपरा भारतीय आध्यात्मिकता की एक सतत विकसित होती हुई धारा है। इस परंपरा में अनेक संतों और आचार्यों ने समय-समय पर नए विचार और प्रयोग किए हैं। ओशो का स्थान इस परंपरा में एक नवाचारी विचारक और प्रयोगशील गुरु के रूप में देखा जा सकता है। उन्होंने योग को कठोर तपस्या से मुक्त कर उसे जीवन-उत्सव और जागरूकता की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी दृष्टि में योग किसी धर्म या संप्रदाय से बंधा हुआ नहीं है, बल्कि चेतना के विकास की सार्वभौमिक प्रक्रिया है। ओशो के अनुसार योग का सार ध्यान है। वे कहते हैं कि योग कोई कठोर अनुशासन नहीं, बल्कि जागरूकता की प्रक्रिया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि योग परंपरा में ओशो का योगदान महत्वपूर्ण और विशिष्ट है, क्योंकि उन्होंने योग को आधुनिक युग के लिए प्रासंगिक बनाया और उसे



वैश्विक स्तर पर नई पहचान दिलाई। यद्यपि ओशो पारंपरिक गुरुओं से भिन्न थे, फिर भी उनका योगदान योग को आधुनिक युग के अनुकूल बनाने में महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, योग परंपरा में ओशो का स्थान एक सेतु के रूप में देखा जा सकता है जो प्राचीन आध्यात्मिक ज्ञान को आधुनिक चेतना से जोड़ता है।

संदर्भ सूची

1. ओशो. (2016). *जिन खोजा तिन पाईया*. ओशो मीडिया इंटरनेशनल, पृ. 438।
2. सत्यार्थी, स्वामी आनंद. (संवत् 2067 [2010]). *सक्रिय ध्यान के रहस्य* (चतुर्थ संशोधित संस्करण). ओशो दर्शन आश्रम, पृ. 126।
3. गदैं, एल. एन., & पोद्दार, हनुमान प्रसाद (सं.). (संवत् 2056). *योगांक* (10वाँ विशेषांक). गीता प्रेस, पृ. 255।
4. गदैं, एल. एन., & पोद्दार, हनुमान प्रसाद (सं.). (संवत् 2056). *योगांक* (10वाँ विशेषांक). गीता प्रेस, पृ. 255।
5. गदैं, एल. एन., & पोद्दार, हनुमान प्रसाद (सं.). (संवत् 2056). *योगांक* (10वाँ विशेषांक). गीता प्रेस, पृ. 255।
6. सरस्वती, स्वामी दर्शनानन्द. (2007). *उपनिषद् प्रकाश*. राधा प्रेस, पृ. 351–353।
7. पाण्डेय, रामनारायण दत्त शास्त्री (सं.). (संवत् 2045). *श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण* (7वाँ संस्करण). गीता प्रेस, पृ. 242।
8. दास, स्वामी रामसुख. (संवत् 2060). *श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी* (46वाँ संस्करण). गीता प्रेस, पृ. 185।
9. दास, स्वामी रामसुख. (संवत् 2060). *श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी* (46वाँ संस्करण). गीता प्रेस, पृ. 250–255।
10. पोद्दार, हनुमान प्रसाद. (संवत् 2073). *श्रीमद्भागवत पुराण* (खण्ड 1). गीता प्रेस, पृ. 658।
11. पोद्दार, हनुमान प्रसाद. (संवत् 2063). *श्रीमद्भागवत पुराण* (भाग 2). गीता प्रेस, पृ. 85।
12. निरंजनानन्द, स्वामी. (2011). *घेरण्ड संहिता*. योग पब्लिकेशन ट्रस्ट, पृ. 10।
13. दिगम्बर, स्वामी, & झा, पिताम्बर. (2001). *हठप्रदीपिका*. कैवल्यधाम योग संस्थान, पृ. 10।
14. सिंह, रामहर्ष. (संवत् 1662). *योग एवं यौगिक चिकित्सा*. चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, पृ. 04।
15. ओशो. (2013). *ध्यान विज्ञान*. ओशो मीडिया इंटरनेशनल, पृ. 184।
16. चैतन्य, स्वामी कीर्ति. (2004). *भारत एक सनातन यात्रा*. डायमंड पॉकेट बुक्स, पृ. 19।
17. शशिकांत, सदैव. (2020). *ओशो का इस जगत को योगदान*. प्रभाकर प्रकाशन, पृ. 15।
18. ओशो. (2013). *ध्यान विज्ञान*. ओशो मीडिया इंटरनेशनल, पृ. 183।
19. चैतन्य, स्वामी कीर्ति. (2004). *भारत एक सनातन यात्रा*. डायमंड पॉकेट बुक्स, पृ. 31।



The Asian Thinker

A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)

Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)

Website: www.theasianthinker.com

Email: asianthinkerjournal@gmail.com

20. चैतन्य, स्वामी कीर्ति. (2004). *भारत एक सनातन यात्रा*. डायमंड पॉकेट बुक्स, पृ. 111
21. शशिकांत, सदैव. (2010). *कौन है ओशो*. डायमंड पॉकेट बुक्स, पृ. 229।
22. शशिकांत, सदैव. (2010). *कौन है ओशो*. डायमंड पॉकेट बुक्स, भूमिका।
23. सत्यार्थी, स्वामी आनंद. (संवत् 2067 [2010]). *सक्रिय ध्यान के रहस्य* (चतुर्थ संशोधित संस्करण).
ओशो दर्शन आश्रम, पृ. 127।
24. शशिकांत, सदैव. (2010). *कौन है ओशो*. डायमंड पॉकेट बुक्स, पृ. 27।
25. ओशो. (2013). *ध्यान विज्ञान*. ओशो मीडिया इंटरनेशनल, पृ. 183।

143